



प्रेमचंद का बाल साहित्य: व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्य और सामाजिक यथार्थ का एक  
समेकित विश्लेषण

पूर्णमा चौबे।

स्नातक - लेडी श्री राम कॉलेज फॉर वूमन (दिल्ली विश्वविद्यालय)

स्नातकोत्तर - कमला नेहरू कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)

प्रस्तावना: बाल साहित्य की परिभाषा, अवधारणा और उसका ऐतिहासिक-सांस्कृतिक महत्त्व

'बाल साहित्य' शब्द का शाब्दिक अर्थ है बच्चों के लिए निर्मित साहित्य, लेकिन साहित्यिक विमर्श में इसकी परिभाषा केवल आयु-सीमा तक सीमित नहीं रहती। बाल साहित्य वह विधा है जो बाल पाठकों की मानसिकता, संवेदनशीलता, कल्पनाशक्ति और विकासशील चेतना को लक्ष्य करके लिखी जाती है। साहित्य सामान्यतः जनजीवन का दर्पण है, और यह सिद्धांत बाल साहित्य पर भी समान रूप से लागू होता है। साहित्य चाहे प्रौढ़ हो या बाल, उसकी प्रकृति और प्रयोजन एक ही है—जीवन का चित्रण और मानव चेतना को उन्नत करना। लेकिन बाल साहित्य के संबंध में पाठक की आयु का प्रश्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बाल-मनोविज्ञान की संरचना, उसकी जरूरतें, उसकी जिज्ञासाएँ और उसकी सीखने की क्षमता प्रौढ़ पाठक से अलग होती है। यही आयु-अंतराल ही है जिसके कारण सामान्य साहित्य के समांतराल बाल साहित्य के सृजन की आवश्यकता सुलभ और अनिवार्य हो गई है।

एक विकासशील समाज सदा सुंदर भविष्य के लिए अपने वंशजों के उन्नत जीवन की परिकल्पना करता है। बाल-अध्ययन और इस संबंधी क्रिया-कलापों को नए रूप में विवेचन करना उचित है। समाज की द्रुत, अग्रगामी और तीव्र परिवर्तित सामाजिक परिस्थिति और उसके प्रतिफल को देखते हुए बाल-व्यक्तित्व के आशानुरूप विकास साधन करना यद्यपि अधिक कष्टसाध्य काम है, फिर भी इस कार्य और दायित्व को फलप्रसू बनाने में माता-पिता, शिक्षक के साथ-साथ समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। क्योंकि सब मानते हैं कि बालक ही देश का भविष्य है। आज का बालक ही कल का नागरिक बनेगा और देश की बागडोर संभालेगा। इसीलिए यह आवश्यक है कि हम बालकों तक उत्कृष्ट बाल साहित्य पहुंचाए ताकि वे उसे पढ़कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें। बाल साहित्य न सिर्फ बालकों का मनोरंजन करता है, बल्कि यह उनकी जिज्ञासाओं को भी शांत करता है, रुचियों का परिष्कार करता है और उनमें अच्छे संस्कार भरता है। इस दृष्टिकोण से बाल साहित्य के अध्ययन, प्रयोजन और विकास साधन की प्रचेष्टाओं को प्राधान्य देना उचित है।

बाल साहित्य के प्रति द्वितीय श्रेणी का विचार एक गंभीर आलोचनात्मक विमर्श का विषय है। साहित्य जगत में बाल साहित्य को लेकर एक द्वितीय श्रेणी का विचार बनता है। लोगों को

लगता है कि बाल साहित्य लिखना बचकाना काम है। लेकिन बाल साहित्य का लेखन बच्चों का खेल नहीं होता। कई साहित्यकारों ने इस बाल साहित्य के लेखन को लेकर, बाल पत्रकारिता को लेकर यह भी कहा कि यह तो दोयम दर्जे का काम है। इसको करने वाले लोग वास्तव में पत्रकारिता और साहित्य जगत के होते ही नहीं हैं, और बच्चों के लिए लिखने का क्या अर्थ होता है भला। लोग आर्थिक मजबूरी में बाल साहित्य की रचना करते हैं। यह विचारधारा गहराई से आलोचना की मांग करती है। बाल साहित्य को दोयम दर्जे का मानना साहित्य के प्रयोजन और बाल-मनोविज्ञान की पूर्ण अन्याय है। बाल साहित्य का लेखन वास्तव में सबसे कठिन लेखन है, क्योंकि लेखक को बाल-मनोविज्ञान को समझते हुए सरल भाषा में गहरे विचार प्रस्तुत करने चाहिए। यह विधा बच्चों के चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों के विकास और सामाजिक संवेदनशीलता के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

हिन्दी बाल साहित्य की ऐतिहासिक परंपरा: पंचतंत्र से प्रेमचंद तक

हिन्दी बाल साहित्य लेखन की ऐतिहासिक परंपरा पर नजर दौड़ाएं तो पाते हैं कि 'पंचतंत्र' की कथाएं बाल साहित्य का एक सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसके साथ 'हितोपदेश', 'अमर कथाएं', एवं 'अकबर-बीरबल' के किस्से बच्चों के साहित्य में सम्मिलित हैं। विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से शरारती राजकुमारों को अल्प समय में संस्कारित करने के लिए पशु-पक्षियों को माध्यम बनाकर उन्हें शिक्षाप्रद प्रेरणा दी। अरस्तू ने भी माना है कि "बच्चों की शैतानियों को सीमित और नियंत्रित करने के लिए उन्हें रोचक कहानियां सुनानी चाहिए"। यह ऐतिहासिक परंपरा प्रेमचंद के बाल साहित्य को गहराई से प्रभावित करती है। प्रेमचंद ने इस परंपरा को आधुनिक सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ते हुए बाल साहित्य को एक नया उद्देश्य और दिशा दी।

पंचतंत्र और हितोपदेश जैसी प्राचीन कथाओं में शिक्षा का समावेश कहानियों के माध्यम से होता था, जो बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप था। इन कथाओं में पशु-पक्षी, वन और जंगल के प्राणी मुख्य पात्र होते थे, जो बच्चों की कल्पनाशीलता को उर्वर बनाते थे। लेकिन समय के साथ हिन्दी बाल साहित्य में नई विधाओं का उदय हुआ। 19वीं और 20वीं सदी के प्रारंभ में बाल पत्रिकाओं जैसे 'सुहृद', 'बालमित्र', 'सुप्रभात' और 'हंस' ने बाल साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन पत्रिकाओं ने प्रेमचंद, निराला, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे विशिष्ट साहित्यकारों को बाल साहित्य लिखने के लिए प्रेरित किया।

प्रेमचंद के बाल साहित्य पर अन्य साहित्यकारों के विचार बाल साहित्य के महत्व को स्पष्ट करते हैं। रबीन्द्रनाथ ठाकुर कहते हैं कि "ठीक से देखने पर, बच्चे जैसा पूरा ना कोई नहीं है। देश, काल, शिक्षा प्रथा के अनुसार वयस्क मनुष्य में कितने नए परिवर्तन हुए हैं, लेकिन बच्चे हजारों साल पहले जैसा नया था, आज भी वैसा ही है। वही अपरिवर्तनीय पूरातन, बारंबार आदमी

के घर में बच्चों का रूप रखकर जन्म लेता है। तो भी सबसे पहले दिन वह जैसा नया था, जैसा सुकुमार था, जैसा भोला था, जैसा मीठा था, आज भी ठीक वैसा ही है। वैसा ही अपरिवर्तनीय पूरातन। इस जीवन चिरंतता का कारण यही है कि शिशु या बच्चे प्रकृति की सृष्टि हैं"। रबीन्द्रनाथ ठाकुर का यह विचार बाल-मनोविज्ञान की अपरिवर्तनीयता और बच्चों की प्रकृति-सहजता को दर्शाता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कहते हैं कि "मैं कितना बड़ा साहित्यकार क्यों न बन जाऊँ, पर मेरी लेखनी तभी सार्थक होगी जब इस देश के बाल गोपाल मेरी कोई कृति पढ़कर आनंद विभोर हो"। निराला का यह विचार बाल साहित्य के प्रयोजन और लेखक की सार्थकता को बाल पाठकों के आनंद से जोड़ता है। चाचा नेहरू 1943 से 1953 के बीच दिए गए अपने एक भाषण में बच्चों की मनोवृत्तियों के बारे में कहते हैं कि "अनगिनत बच्चे अनेक रंग बिरंगे कपड़े पहनकर विविध भाषाओं को बोलते हुए छोटे-छोटे स्वेच्छापूर्ण विहंगों के समान दिखाई पड़ते हैं। वे देखने में भिन्न-भिन्न होने पर भी उनके मन अंतःकरण सभी एक ही तरह के होते हैं। भविष्य में अपने दायित्व को प्रकाश में ला सकें। इसलिए बालकों की सर्वांगीण एवं मनोवैज्ञानिक विकास के लिए बहुत कुछ करना है। भारत सरकार भी 'बच्चों की मुस्कान, देश की शान' नारा देकर बच्चों की सर्वांगीण विकास करने पर बल दे रही है। इनके शब्दों से बाल साहित्य को आदर मिलने लगा"। नेहरू के शब्द बाल साहित्य को राष्ट्रीय विकास के साथ जोड़ते हैं और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए साहित्य की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

#### प्रेमचंद का बाल साहित्य: एक समग्र परिचय और लेखन-विधा

प्रेमचंद ने 1930 में 'हंस' के संपादकीय में 'बच्चों को स्वाधीन बनाओ' शीर्षक के अंतर्गत लिखा था— "बालक को प्रधानतः ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वह जीवन में अपनी रक्षा आप कर सके। बालकों में इतना विवेक होना चाहिए कि वह हर एक काम के गुण-दोष को भीतर से देखें....।" स्वयं की इस कसौटी पर प्रेमचंद का बाल साहित्य बच्चों के मानवीय संवेदनाओं के साथ-साथ सामाजिक आचार-विचार, न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित का संदेश देती है। प्रेमचंद जी ने जो इतर साहित्य लिखा है सामान्यतः हम सब जानते हैं। उनकी जो प्रसिद्धि है, ख्याति है वो उपन्यास के लिए है, कहानी के लिए। लेकिन इन दो विधाओं को छोड़कर जिन अन्य विधाओं पर प्रेमचंद जी ने लेखन कार्य किया उनमें पत्र साहित्य भी प्रेमचंद जी का है, संपादन कर्म भी है और एक महत्त्वपूर्ण विषय है बाल साहित्य का लेखन।

प्रेमचंद की बाल-साहित्य की प्रमुख पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

1. माहात्मा शेख सादी (1917)
2. राम चर्चा (1928)



3. जंगल की कहानियाँ (1936)
4. कुत्ते की कहानी (1936)
5. दुर्गादास (1938)
6. कलम, तलवार और त्याग (दो भाग, 1940)

इनमें "जंगल की कहानियाँ" और "कुत्ते की कहानी" सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं जो सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत आती हैं। कुत्ते की कहानी एक लंबी कहानी है जिसे बाल उपन्यास कहना अधिक उपयुक्त होगा। साथ ही महापुरुषों को लेकर उनका बाल-बुयोगी जीवनी साहित्य भी मिलता है। ऐसे साहित्य को हम जानकारी पूर्ण साहित्य भी कह सकते हैं। प्रेमचंद ने बाल साहित्य की विधाओं में कहानी, उपन्यास, जीवनी, अनुवाद और संपादन सहित बहुआयामी कार्य किया। उनका बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप सरल, रोचक और शिक्षाप्रद है।

प्रेमचंद के बाल साहित्य का वर्गीकरण: आयु-वर्ग के आधार पर

प्रेमचंद के बाल साहित्य को तीन हिस्सों में बांटकर देखना चाहिए:

1. शिशु अवस्था के लिए शिशु साहित्य (केजी फर्स्ट से तीसरी से लेकर पांचवीं कक्षा तक)
2. बाल्यावस्था के लिए बाल साहित्य (पांचवीं से आठवीं कक्षा)
3. किशोरावस्था के लिए किशोर साहित्य (11वीं-12वीं के बच्चे)

उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं में बालक की मानसिक स्थिति भिन्न-भिन्न होती है। उनकी कुछ कहानियां जब हम पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है कि ये तो बिल्कुल छोटी कक्षा के बच्चों के लिए लिखी गई है अर्थात् जिसको हम शिशु कथाएं कह सकते हैं। आप कहेंगे शिशु कथाएं क्या होता है इसलिए आपको बताता चलूँ शिशु कथाओं का एक मोटा अंदाज आप ऐसा मानकर के चलिए कि केजी फर्स्ट के बच्चे से लेकर के, तीसरी से लेकर पांचवीं कक्षा तक का जो बच्चा होता है वो शिशु कथाएं पढ़ता है। तो प्रेमचंद जी की कुछ कहानियां शिशु कथाओं के अंतर्गत आती हैं।

कुछ कहानियां बालकथाओं के अंतर्गत आती हैं। पांचवीं से आठवीं कक्षा के बच्चे जिसको पसंद करते हैं उनकी कुछ कहानियां ऐसी रही जो नौवीं और दसवीं के विद्यार्थी जिसको पढ़ सके इसको मैं सामान्यतः तरुण कथाएं कहता हूँ। और इसके बाद एक तीसरा बाल साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग आता है किशोर साहित्य अर्थात् 11वीं 12वीं के बच्चे जिसको पसंद करते हैं। प्रेमचंद ने आयु-वर्ग के आधार पर बाल साहित्य का वर्गीकरण किया है क्योंकि प्रत्येक आयु-वर्ग की मानसिकता, सीखने की क्षमता और रुचियां अलग होती हैं। शिशु कथाओं में सरल भाषा, पुनरावृत्ति और चित्रात्मकता प्रमुख है। बालकथाओं में कथानक, वर्णन और नैतिक संदेश अधिक



होते हैं। किशोर साहित्य में ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विषयों का गहरा विश्लेषण होता है।

राम चर्चा: रामचंद्र जी का बालोपयोगी जीवनी साहित्य और नैतिक मूल्यों का प्रतीक

प्रेमचंद ने जो बाल साहित्य रचा उसमें उनकी एक विशिष्ट पुस्तक है - राम चर्चा। पहले यह उर्दू में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक की भूमिका में प्रेमचंद ने लिखा, "हिंदुओं में दो ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्हें ईश्वर का अवतार माना जाता है - एक कृष्ण और दूसरे हैं राम। ... यह रुतबा रामचंद्र जी को कैसे हासिल हुआ, आज हम तुम्हें वही किस्सा कहते हैं। दिल लगाकर पढ़ो। हमें उम्मीद है कि इस लासानी (अद्वितीय) बुजुर्ग के हालात ध्यान से पढ़ोगे और उनसे सबक हासिल करोगे।" रामचंद्र को लेकर इस प्रकार की पुस्तक कदाचित पहली बार लिखी गई थी जिसकी प्रशंसा गांधी जी ने भी की थी। यह पुस्तक बाल-पाठकों के लिए रामचंद्र जी के चरित्र को सरल और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद ने इसमें राम के नैतिक मूल्यों, वीरता, धर्मपरायणता और संस्कारों को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत किया है।

राम चर्चा में प्रेमचंद ने राम के जीवन के प्रमुख पर्वों—जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, वनवास, लंका युद्ध और राज्याभिषेक—को सरल कथा रूप में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक का उद्देश्य बच्चों में धर्म, कर्म, वीरता और त्याग की भावना को जागृत करना है। राम के चरित्र में प्रेमचंद ने एक संपूर्ण आदर्श नागरिक की छवि खींची है जो बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। राम चर्चा में प्रेमचंद ने राम के साथ सीता, लक्ष्मण, हनुमान और अन्य पात्रों के चरित्र भी सरल भाषा में प्रस्तुत किए हैं। गांधी जी ने राम चर्चा की प्रशंसा में कहा था कि यह पुस्तक बच्चों के लिए नैतिक मूल्यों और आदर्शों का सरोवर है। राम चर्चा प्रेमचंद के बाल जीवनी साहित्य की एक अनूठी रचना है जो धार्मिक और नैतिक विषयों को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करती है।

जंगल की कहानियाँ: एडवेंचर और नैतिक मूल्यों का समेकन

प्रेमचंद जी ने जब 1936 में अपना पहला बाल कहानी संग्रह 'जंगल की कहानियाँ' प्रकाशित किया था जो विशुद्ध रूप से बच्चों के लिए लिखा हुआ था। इसमें कुछ विषय तो छोटे बच्चों के लिए थे लेकिन अधिकांश विषय ऐसे थे जिसको हम तरुण साहित्य या किशोर साहित्य मान सकते हैं। वो इसलिए कि उस युग में एडवेंचर बड़ी अवस्था के बच्चों को पसंद आता है और उनके अनेक कथानक ऐसे थे, अनेक कहानियाँ ऐसी थी जो जंगल के एडवेंचर से जुड़े हुए थे। आगर में आपको उनमें से कुछ कहानियों के शीर्षक बताऊँ तो आपको स्वयं आभास होगा कि वह कैसी कहानियाँ रही होगी जैसे:



- गुब्बारे पर चीता
- जुड़वा भाई
- पागल हाथी
- पालतू भालू
- वन मानुष की दर्दनाक कहानी
- बनमानुष खानसामा
- मगर का शिकार (एक बहुत अच्छे शिकार कथा, यह प्रेमचंद जी की बहुत प्रसिद्ध है)
- मिट्टू (शीर्षक से हम जानते हैं तोता। लोक बोली का शब्द लेकर के उस कहानी का शीर्षक उन्होंने तय किया था। मिट्टू कहानी उनकी बड़ी प्रसिद्ध है)
- शेर और लड़का (यह भी एक जंगल कथा है)
- सांप की मणि (यह भी कहानियां है)

ये सब की सब कहानियां जंगल की कहानियां शीर्षक से आई थीं। एक और उन्होंने कहानी लिखी थी कुत्ते की कहानी वो भी इसी प्रकार की कहानियों में गिनी जाती है।

जंगल की कहानियाँ में प्रेमचंद ने जंगल के पशु-पक्षियों, वन-मानुषों और एडवेंचर के माध्यम से बच्चों में साहस, बुद्धिमत्ता और नैतिक मूल्यों को जागृत किया है। इन कहानियों में पशु-पक्षी मुख्य पात्र हैं जो बच्चों की कल्पनाशीलता को उर्वर बनाते हैं। 'मगर का शिकार' कहानी में प्रेमचंद ने शिकार की कथा को नैतिक संदेश के साथ जोड़ा है। 'मिट्टू' कहानी में तोते के चरित्र के माध्यम से बच्चों में बुद्धिमत्ता और सच्चाई का संदेश दिया है। 'शेर और लड़का' कहानी में शेर और लड़के के प्रेम की कथा को प्रस्तुत किया गया है जो बच्चों में सहृदयता और भाईचारा की भावना को जागृत करता है। जंगल की कहानियाँ प्रेमचंद के बाल साहित्य की एक अनूठी रचना है जो एडवेंचर और नैतिक मूल्यों का समेकन करती है।

कुत्ते की कहानी: बाल/किशोर उपन्यास का अनूठा शिल्प और मानव समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य

कुत्ते की कहानी बाल/किशोर उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया अपने कथ्य और शिल्प में अनूठा उपन्यास है। जिसे प्रेमचंद ने अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले ही लिखा था। 14 जुलाई 1936 को इसकी भूमिका में बच्चों से बात करते हुए उन्होंने लिखा— "प्यारे बच्चों तुम जिस संसार में रहते हो वहां कुत्ते-बिल्ली ही नहीं पेड़-पत्ते और ईट-पत्थर तक बोलते हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे तुम बोलते हो और तुम उन सब की बातें सुनते हो और बड़े ध्यान से कान लगाकर सुनते हो, इन बातों में तुम्हें कितना आनंद आता है। तुम्हारा संसार सजीवों का संसार है उसमें सभी एक जैसे जीव बसते हैं। उन सब लोगों में प्रेम है, भाईचारा है, दोस्ती है और जो सरलता साधु-संतों को बरसों के चिंतन और साधना से प्राप्त नहीं होती..... तुम

देखोगे कि यह कुक्ता बाहर से कुक्ता होकर भी भीतर से तुम्हारे ही जैसा बालक है। वही प्रेम और सेवा तथा साहस और सच्चाई है, जो तुम्हें इतना प्रिय है"।

मानव समाज की विसंगतियों पर सटीक व्यंग्य करता यह बाल उपन्यास केवल मनोरंजन कथा ही नहीं है लेकिन बच्चों के हृदय में जीव-जंतुओं के प्रति करुणा, सम्मान का भाव जागृत करना भी इसका उद्देश्य है। जीव-जंतुओं का यह जगत लेखक के ग्रामीण परिवेश का ही अटूट हिस्सा है। यह सच है कि पशु-पक्षियों का संसार बच्चों का प्रिय संसार है। इसलिए ऐसे पात्रों से बच्चे ज्यादा लगाव महसूस करते हैं। इस उपन्यास का नायक 'कल्लू' कुक्ता बच्चों में सहृदयता और संवेदनशीलता का बीजवपन करने में पूरी तरह समर्थ है।

यहाँ लेखक समाज की विद्रूपताओं और भ्रष्ट व्यवस्था की पोल खोलता बताता है— "चौधरी बोले- अजी पुलिस का ढकोसला बहुत बुरा होता है, अभी आकर कुछ न कुछ चूसते ही हैं। मैंने तो इतनी उम्र में सैकड़ों बार इत्तिलाएं की, मगर चोरी की गई हुई चीज कभी वापस न मिली।" यह संवाद बताता है कि देश की पुलिस का चरित्र इतने बरस बीतने पर भी नहीं बदला। तुलसीदास तो बहुत पहले कह गए थे 'पेट कि अग्नि' सबसे बड़ी है। प्रेमचंद यहाँ इसे कुछ और स्पष्ट करते हुए कहते हैं— "पेट भी क्या चीज है, इसके लिए लोग अपने पराए को भूल जाते हैं, नहीं तो अपनी सगी माता और अपना सगा भाई क्यों दुश्मन हो जाते।" पेट की इसी व्यवस्था के चलते लेखक बच्चों के खेलने में नैतिक मूल्यों, मानवीयता व संवेदनशीलता का स्रोत पर प्रवाहित करना चाहता है।

कुत्ते की कहानी में प्रेमचंद ने आत्मकथात्मक शैली में कुत्ते 'कल्लू' के चरित्र के माध्यम से मानव समाज की विसंगतियों, भ्रष्ट व्यवस्था और पेट की अग्नि पर व्यंग्य किया है। 'कल्लू' कुक्ता बच्चों में सहृदयता, संवेदनशीलता, प्रेम, सेवा, साहस और सच्चाई की भावना को जागृत करने में पूरी तरह समर्थ है। यह उपन्यास बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप सरल, रोचक और शिक्षाप्रद है। कुत्ते की कहानी प्रेमचंद के बाल उपन्यास साहित्य की एक अनूठी रचना है जो आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है और मानव समाज की विसंगतियों पर सटीक व्यंग्य करता है।

**दुर्गादास: ऐतिहासिक उपन्यास और देशप्रेम की भावना का प्रतीक**

'दुर्गादास' नामक ऐतिहासिक उपन्यास वीर दुर्गादास राठौर के जीवन की संघर्षपूर्ण वीरगाथा है, जो अपनी मातृभूमि के लिए अपने बलिदान हेतु कृतसंकल्प था। वीर दुर्गादास की जीवन और आदर्शों की वर्णन द्वारा बालकों में देशप्रेम की भावना जागृत करना लेखक का उद्देश्य रहा। इसकी भूमिका में उन्होंने माना है कि— "बालकों के लिए राष्ट्र के सपुत्रों के चरित्र से बढ़कर



उपयोगी साहित्य कोई दूसरा नहीं है। इनसे उनका चरित्र ही बलवान नहीं होता है, उनमें राष्ट्रप्रेम और साहस का संचार भी होता है।”।

यह उपन्यास बाल-पाठकों को ऐतिहासिक背景 में देशप्रेम, वीरता और बलिदान की भावना से जोड़ता है। प्रेमचंद ने दुर्गादास राठौर के चरित्र को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप सरल और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया है। दुर्गादास उपन्यास में प्रेमचंद ने दुर्गादास राठौर के जीवन के प्रमुख पर्वों—जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, मराठा साम्राज्य के साथ संघर्ष, बलिदान और राज्याभिषेक—को सरल कथा रूप में प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का उद्देश्य बच्चों में देशप्रेम, वीरता, त्याग और कर्म की भावना को जागृत करना है। दुर्गादास के चरित्र में प्रेमचंद ने एक संपूर्ण आदर्श नागरिक की छवि खींची है जो बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

दुर्गादास उपन्यास में प्रेमचंद ने दुर्गादास राठौर के साथ अन्य पात्रों जैसे शिवाजी, अकबर और अन्य मराठा वीरों के चरित्र भी सरल भाषा में प्रस्तुत किए हैं। इस उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्य और कथात्मक वर्णन का समेकन है जो बच्चों के लिए शिक्षाप्रद है। दुर्गादास प्रेमचंद के बाल ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य की एक अनूठी रचना है जो देशप्रेम, वीरता और बलिदान की भावना को जागृत करती है।

कलम, तलवार और त्याग: महापुरुषों के प्रेरणादायक शब्दचित्र और आदर्शों का सरोवर

"कलम, तलवार और त्याग" दो भागों में प्रकाशित इस रचना में लेखक ने राणा प्रताप, रणजीत सिंह, अकबर, विवेकानंद, गोपाल कृष्ण गोखले, सर सैयद अहमद खां आदि देश के विभिन्न महापुरुषों के प्रेरणादायक और उद्बोधक शब्दचित्र अंकित किए हैं। इन सभी ऐतिहासिक और राजनीतिक नेताओं के चरित्रों के माध्यम से लेखक बच्चों में वीर, उत्साह और देशप्रेम की भावनाओं के साथ सच्ची लगन और अदम्य साहस का बीजवपन भी करना चाहता है, जो केवल तत्कालीन समय ही नहीं वरन आज की भी समय में की आवश्यकता है।

यह पुस्तक बाल-पाठकों के लिए महापुरुषों के चरित्र को सरल और प्रेरणादायक तरीके से प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद ने इन चरित्रों को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करके बच्चों में वीरता, उत्साह और देशप्रेम की भावना को जागृत किया है। कलम, तलवार और त्याग में प्रेमचंद ने राणा प्रताप, रणजीत सिंह, अकबर, विवेकानंद, गोपाल कृष्ण गोखले, सर सैयद अहमद खां आदि महापुरुषों के चरित्रों के माध्यम से बच्चों में वीरता, उत्साह, देशप्रेम, सच्ची लगन और अदम्य साहस की भावना को जागृत किया है। इन महापुरुषों के चरित्र बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और उनमें आदर्शों को जागृत करते हैं।

कलम, तलवार और त्याग में प्रेमचंद ने प्रत्येक महापुरुष के जीवन के प्रमुख पर्वों, उनके संघर्ष, त्याग और आदर्शों को सरल कथा रूप में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक का उद्देश्य बच्चों में वीरता, उत्साह, देशप्रेम, सच्ची लगन और अदम्य साहस की भावना को जागृत करना है। कलम, तलवार और त्याग प्रेमचंद के बाल जीवनी साहित्य की एक अनूठी रचना है जो महापुरुषों के प्रेरणादायक शब्दचित्र अंकित करती है और बच्चों में आदर्शों को जागृत करती है।

#### अनुवाद और संपादन: बाल साहित्य का विस्तार और समृद्धि

इतना ही नहीं तो प्रेमचंद जी ने अन्य भाषाओं में आने वाले बाल साहित्य को अनुवाद करके सरल भावानुवाद करते हुए भी संपादित करके कुछ ग्रंथों का प्रकाशन किया था। इस दिशा में मुझे लगता है कि हम सबको याद रखना चाहिए कि मराठी से हिंदी में अनुवाद करके 'बाल नीति कथा' एक ऐसा संग्रह उन्होंने संपादित किया था। यह संग्रह 1925 में आया था।

प्रेमचंद ने बाल साहित्य के विस्तार के लिए अनुवाद और संपादन के माध्यम से अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को हिंदी पाठकों तक पहुंचाया। यह कार्य बाल साहित्य की समृद्धि के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। प्रेमचंद ने मराठी से हिंदी में अनुवाद करके 'बाल नीति कथा' एक ऐसा संग्रह संपादित किया था जो 1925 में आया था। इस संग्रह में मराठी बाल साहित्य के उत्कृष्ट निबंध, कहानियां और कथाएं हिंदी में सरल भाषा में प्रस्तुत किए गए थे। प्रेमचंद का अनुवाद और संपादन कार्य बाल साहित्य के विस्तार और समृद्धि के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था।

#### पाठ्यपुस्तकों में प्रेमचंद की कहानियां: बाल साहित्य का व्यापक प्रभाव और बाल-मनोविज्ञान का अनुरूप

बाल साहित्य की बात करते हुए मैं आपको बताना चाहता हूं सामान्यतः हम जानते हैं कि जो पाठ्यपुस्तकें बनती हैं। हम सब ने भी पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाई की है और विशेष करके पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक की पाठ्य पुस्तकों की कहानियां हम सबको याद रहती हैं। उन पाठ्य पुस्तकों में प्रेमचंद जी की अनेक कहानियों को समाहित किया गया।

प्रेमचंद की कहानियों का पाठ्यपुस्तकों में समावेश इसका प्रमाण है कि उनका बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है। प्रेमचंद की कहानियों जैसे 'बड़े भाईसाहब', 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'कजाकी', 'नादान दोस्त', 'गुल्ली-डंडा', 'परीक्षा', 'मंत्र' आदि को पाठ्यपुस्तकों में समाहित किया गया है। इन कहानियों का पाठ्यपुस्तकों में समावेश इसका प्रमाण है कि प्रेमचंद का बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है।



श्रेष्ठ बाल साहित्य की धारणा: गुदगुदाई और समाधान

श्रेष्ठ बाल साहित्य के बारे में धारणा यह है कि वह बच्चों को गुदगुदाय, उनका मनोरंजन करे। साथ ही उनकी समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान उपदेश या यथार्थ से हटकर दे।

श्रेष्ठ बाल साहित्य बच्चों को गुदगुदाता है, उनका मनोरंजन करता है और उनकी समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान उपदेश या यथार्थ से हटकर देता है। प्रेमचंद का बाल साहित्य श्रेष्ठ बाल साहित्य की सभी धारणाओं को पूरा करता है। वह बच्चों को गुदगुदाता है, उनका मनोरंजन करता है और उनकी समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान उपदेश या यथार्थ से हटकर देता है।

बड़े भाईसाहब: शिक्षण व्यवस्था पर व्यंग्य और बाल मनोविज्ञान का उजागर

दो अलग-अलग तरह के बाल मनोविज्ञान प्रस्तुत करती 'बड़े भाईसाहब' कहानी शिक्षण व्यवस्था पर व्यंग्य का तोता रटंत प्रणाली और परीक्षा पद्धति पर प्रश्न चिन्ह अंकित करती है। कहानी को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने छोटे भाई को चुना। यहां बड़ा भाई परंपरावादी और सिद्धांतवादी है जबकि छोटा भाई समय व परिस्थिति के हिसाब से पढ़ता है और पास होता जाता है। अंत में बड़े भाई साहब लकीर का फकीर, किताबी कीड़ा और खोखली परंपरा की दीवारों को लांघकर छोटे भाई की कलाई थामे अपनी उमंगों और आकांक्षाओं के आसमान की दौड़ने की ठानते हैं। यहां बड़े भाई की डांट व उपदेश तथा छोटे भाई की शरारतें और उसका भय पूरी तरह से बाल मनोविज्ञान को उजागर करता है- "मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था"।

यह कहानी बाल-मनोविज्ञान को गहराई से उजागर करती है और शिक्षण व्यवस्था की रटंत प्रणाली पर व्यंग्य करती है। प्रेमचंद ने बड़े और छोटे भाई के चरित्र को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करके बच्चों में समानता और समझ की भावना को जागृत किया है। 'बड़े भाईसाहब' कहानी में प्रेमचंद ने दो अलग-अलग तरह के बाल मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है। बड़ा भाई परंपरावादी और सिद्धांतवादी है जबकि छोटा भाई समय व परिस्थिति के हिसाब से पढ़ता है और पास होता जाता है। कहानी शिक्षण व्यवस्था की रटंत प्रणाली और परीक्षा पद्धति पर व्यंग्य करती है और बाल-मनोविज्ञान को गहराई से उजागर करती है।

दो बैलों की कथा: मानवीयता और करुणा का संदेश और जीव-जंतुओं के प्रति सहृदयता

'दो बैलों की कथा' में मोती बदला लेना चाहता है, उस मालिक से जो उसे झूरी के यहां से जबरदस्ती ले आया है, लेकिन उसके मन में तुरंत ख्याल आता है इससे तो वह बालिका अनाथ हो जाएगी, जो उसे रोटी खिलाती है। यहाँ हीरा-मोती बैलों के जरिए लेखक अपने मालिक के

प्रति वफादारी, आजादी की प्रतिध्वनि, मानवीयता और करुणा को सामने लाते हैं। इस कहानी में जीवों में निकृष्ट, मूर्ख, सीधा कहे जाने वाले गधे की प्रवृत्ति और मनोदशा का वर्णन करते हुए लेखक अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के सद्गुणों के प्रति आदर भाव को विकसित करना चाहता है— "उसके चेहरे पर विषाद अस्थाई रूप से छाया रहता है। सुख-दुख हानि-लाभ किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं दिखता। ऋषि मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुंच गए हैं पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर"।

यह कहानी बच्चों में मानवीयता, करुणा और वफादारी की भावना को जागृत करती है। प्रेमचंद ने बैलों के चरित्र को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करके बच्चों में सद्गुणों के प्रति आदर भाव को विकसित किया है। 'दो बैलों की कथा' में प्रेमचंद ने हीरा-मोती बैलों के जरिए अपने मालिक के प्रति वफादारी, आजादी की प्रतिध्वनि, मानवीयता और करुणा को सामने लाया है। यह कहानी बच्चों में मानवीयता, करुणा और वफादारी की भावना को जागृत करती है और जीव-जंतुओं के प्रति सहृदयता को विकसित करती है।

**प्रेमचंद का बाल साहित्य: बाल-मनोविज्ञान पर आधारित और सरल भाषा में गहरे विचार**

प्रेमचंद बाल कहानियों की रचना करते समय सदा सजग रहते हैं कि बाल साहित्य सैद्धांतिक विचार भूमि से हटकर सरल सहज बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो। स्वयं उनके शब्दों में— "तत्वहीन कहानी से चाहे मनोरंजन भले हो जाए, मानसिक तृप्ति नहीं होती। यह सच है कि हम कहानियों में उपदेश नहीं चाहते, लेकिन विचारों को उत्तेजित करने के लिए मन के सुंदर भाव को जागृत करने के लिए कुछ न कुछ अवश्य चाहते हैं...."।

प्रेमचंद का बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान पर आधारित है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है। उन्होंने बाल-मनोविज्ञान को समझते हुए सरल भाषा में गहरे विचार प्रस्तुत किए हैं। प्रेमचंद बाल कहानियों की रचना करते समय सदा सजग रहते हैं कि बाल साहित्य सैद्धांतिक विचार भूमि से हटकर सरल सहज बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो। उनका बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान पर आधारित है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

**ईदगाह: मानवीय मूल्यों और बालिकाओं की कहानी और संवेदनशीलता का प्रतीक**

"ईदगाह" के चिरस्मरणीय पात्र हामिद के चरित्र को पढ़कर यह सवाल उठता है कि इतनी छोटी उम्र का बच्चा यकायक अपनी उम्र से अधिक बड़ा होकर अपनी दादी के प्रति आखिर इतना संवेदनशील कैसे हो गया? बाल स्वभाव तो चंचल, बेपरवाह और मस्त मौला होता है। मेले में जहां अन्य बच्चे अपने लिए खिलौने, मिठाइयां लेकर, झूला झूल कर आनंद लेते हैं वहीं हामिद

लोहे का चिमटा कैसे ले सकता है? लेकिन यह कहानी मानवीय मूल्यों और बालिकाओं की कहानी है। यहां बच्चे का अपने बूढ़ी निराश्रित दादी के प्रति अगाध प्रेम भी है उसे असमय परिपक्व बना देता है। यह कहानी बच्चों को एक सीधा सरल संदेश देती है कि हमें अपनी खुशियों, आनंद और स्वार्थ के साथ साथ दूसरों के कष्टों और उनकी खुशियों की चिंता भी करनी चाहिए चाहे वे 'फौलादी हथियार' चिमटा के प्रति आकर्षित होते मित्रगण हों या रोटी बनाते समय दादी की जलते हाथों की।

यह कहानी बच्चों में मानवीय मूल्यों, संवेदनशीलता और दूसरों के प्रति चिंता की भावना को जागृत करती है। प्रेमचंद ने हामिद के चरित्र को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करके बच्चों में संवेदनशीलता को जागृत किया है। 'ईदगाह' कहानी में प्रेमचंद ने हामिद के चरित्र के माध्यम से मानवीय मूल्यों, संवेदनशीलता और दूसरों के प्रति चिंता की भावना को जागृत किया है। हामिद अपनी दादी के प्रति अगाध प्रेम से असमय परिपक्व होता है और बच्चों को सीधा सरल संदेश देता है कि हमें अपनी खुशियों, आनंद और स्वार्थ के साथ साथ दूसरों के कष्टों और उनकी खुशियों की चिंता भी करनी चाहिए।

कजाकी: डाकिये और बालक के निश्चल प्रेम की कथा और बाल मनोविज्ञान की नई परिभाषा

इसी तरह 'कजाकी' कहानी एक डाकिये और बालक के निश्चल प्रेम की कथा है। काम में देरी होने पर पिता द्वारा उसे काम से निकाले जाने पर भावुक बच्चे का अहं और मासूम सोच संवेदनशीलता और बाल मनोविज्ञान की एक नई परिभाषा गढ़ती है— "उस वक्त मेरा जी चाहता था कि मेरे पास सोने की लंका होती तो कजाकी को दे देता और बाबूजी को दिखा देता कि आपके पास निकाल देने से कजाकी का बाल भी बांका नहीं हुआ" या "कजाकी को रोज बुलाने के लिए मेरे पास कोहिनूर हीरा भी होता तो उसको भेंट करने में मुझे पसोपेश ना होता"।

यह कहानी बच्चों में प्रेम, संवेदनशीलता और मासूम सोच की भावना को जागृत करती है। प्रेमचंद ने बालक के चरित्र को बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करके बच्चों में संवेदनशीलता को जागृत किया है। 'कजाकी' कहानी में प्रेमचंद ने एक डाकिये और बालक के निश्चल प्रेम की कथा को प्रस्तुत किया है। काम में देरी होने पर पिता द्वारा उसे काम से निकाले जाने पर भावुक बच्चे का अहं और मासूम सोच संवेदनशीलता और बाल मनोविज्ञान की एक नई परिभाषा गढ़ती है। यह कहानी बच्चों में प्रेम, संवेदनशीलता और मासूम सोच की भावना को जागृत करती है।

अन्य प्रसिद्ध कहानियां: नैतिक मूल्यों का संदेश और बालमन से व्याप्त पंछी-प्रेम

अन्य कहानियों में:

- 'नादान दोस्त': केशव और श्यामा नामक भाई बहन की कहानी जो चिड़ियों के अंडों (बच्चों) के लिए खाने-पीने और देखभाल की व्यवस्था करते हैं पर जो अनजाने में ही 'रक्षा में हत्या' का कारण बनती है। बालमन से व्याप्त पंछी-प्रेम सहानुभूति, परोपकार और बाल-नादानी की कथा अत्यंत रोचक है।
- 'गुल्ली-डंडा': मित्रता के सरल भाव, उत्साह, अनुशासन तथा जाति वर्ग भेद स परे साख्य प्रेम को दर्शाती 'गुल्ली-डंडा' कहानी लोक प्रचलित पारंपरिक खेल गुल्ली डंडे को भी स्थापित करती है।
- 'परीक्षा': नामक कहानी जानकीनाथ के माध्यम से ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मबल और धीरता की सीख देती है।
- 'मंत्र': कहानी गरीब फटे-हाल बूढ़े वैद्व भगत के माध्यम से सज्जनता, उदारता, दया और मानवीयता का संदेश देने में पूरी तरह समर्थ है। यह सभी कहानियां बच्चों को एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में विकसित होने की स्थितियां देती है साथ ही उनकी कल्पना शक्ति को भी उर्वर बनाती है तथा सामाजिक नैतिक मूल्यों के प्रति जागरुक भी करती है।

इन कहानियों की चित्रात्मकता हृदयग्राही है। सरल भाषा-शैली और संक्षिप्त रोचक सहज संवाद बालमन और ज्ञान के अनुरूप जिज्ञासा का शमन करने वाले हैं। सजीवता, गतिशीलता व नाटकीय तत्वों से भरपूर इन कहानियों के संवाद चरित्रों की पूरी छाप छोड़ने में सक्षम हैं।

'नादान दोस्त', 'गुल्ली-डंडा', 'परीक्षा', 'मंत्र' आदि कहानियां बच्चों को एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में विकसित होने की स्थितियां देती है साथ ही उनकी कल्पना शक्ति को भी उर्वर बनाती है तथा सामाजिक नैतिक मूल्यों के प्रति जागरुक भी करती है। इन कहानियों की चित्रात्मकता हृदयग्राही है और सरल भाषा-शैली व संक्षिप्त रोचक सहज संवाद बालमन और ज्ञान के अनुरूप जिज्ञासा का शमन करने वाले हैं।

आज के संदर्भ में प्रेमचंद के बाल साहित्य की आवश्यकता और नैतिक अवमूल्यन के दौर में दिशा बोध

आज के बच्चों में संयम, धैर्य, उदारता, सौहार्द, मानवीयता, सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों का क्षय हो रहा है। वह सकारात्मकता की प्रवृत्ति छोड़ नकारात्मकता की ओर बढ़ रहे हैं। आज हमारा समाज विभिन्न विसंगतियों, वैषम्यों, विद्रूपताओं और विकृतियों से जूझता हुआ नैतिक अवमूल्यन के दौर से गुजर रहा है जहाँ मानवीय संबंध तार-तार हो रहे हैं। जाति, वर्ग, धर्म, छद्म अस्मिताएं अपने ध्वज फहरा रही हैं और सामाजिक संबंधों का ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो रहा है। ऐसे समय में प्रेमचंद के बाल साहित्य की आवश्यकता और बढ़ गई है जो आज के संदर्भ



में एक बार फिर बच्चों को दिशा बोध देकर एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दे सकता है, सकारात्मक मूल

प्रेमचंद का बाल साहित्य आज के संदर्भ में भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह बच्चों को नैतिक मूल्यों, मानवीयता, संवेदनशीलता और देशप्रेम की भावना से जोड़ता है। आज के समाज में नैतिक अवमूल्यन के दौर में प्रेमचंद के बाल साहित्य की आवश्यकता और बढ़ गई है।

समापन: प्रेमचंद के बाल साहित्य का स्थायी महत्व और भविष्य में बाल व्यक्तित्व निर्माण के लिए उपयुक्तता

प्रेमचंद का बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान पर आधारित है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है। उन्होंने बाल-मनोविज्ञान को समझते हुए सरल भाषा में गहरे विचार प्रस्तुत किए हैं। उनका बाल साहित्य बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, मानवीयता, संवेदनशीलता और देशप्रेम की भावना से जोड़ता है।

आज के समाज में नैतिक अवमूल्यन के दौर में प्रेमचंद के बाल साहित्य की आवश्यकता और बढ़ गई है। यह बच्चों को दिशा बोध देकर एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दे सकता है, सकारात्मक मूल्यों का विकास कर सकता है। प्रेमचंद का बाल साहित्य स्थायी महत्व का है और यह भविष्य में भी बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त रहेगा।

प्रेमचंद का बाल साहित्य बाल-मनोविज्ञान पर आधारित है और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त है। उसका स्थायी महत्व है और यह भविष्य में भी बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त रहेगा।

#### आधार और संदर्भ ग्रंथ (Bibliography)

प्रेमचंद की बाल साहित्य पुस्तकें:

1. प्रेमचंद। *माहात्मा शेख सादी*. 1917.
2. प्रेमचंद। *राम चर्चा*. 1928.
3. प्रेमचंद। *जंगल की कहानियाँ*. 1936.
4. प्रेमचंद। *कुत्ते की कहानी*. 1936.
5. प्रेमचंद। *दुर्गादास*. 1938.
6. प्रेमचंद। *कलम, तलवार और त्याग* (दो भाग). 1940.



अनुवाद और संपादन:

1. प्रेमचंद (संपादित). *बाल नीति कथा* (मराठी से हिंदी अनुवाद). 1925.

साहित्यिक पत्रिकाएं और स्रोत:

1. डॉ. परशुराम शुक्ल। "बाल साहित्य : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप". 2021.
2. विकिपीडिया। "प्रेमचंद". 2004.
3. विकिपीडिया। "बाल साहित्य". 2007.
4. अंकिता तिवारी। "शोध आलेख : बाल साहित्य का संदर्भ और हिंदी साहित्य". अपनी माटी, 2024.
5. अंकिता तिवारी। "शोध आलेख : कथा सम्राट 'प्रेमचंद' की बाल कहानियां : एक ...". अपनी माटी, 2024.
6. "बाल साहित्य का मुख्य उद्देश्य : बालक का व्यक्तित्व निर्माण करना". SRJIS, PDF.

वीडियो स्रोत:

1. "मुंशी प्रेमचंद का बाल साहित्य". YouTube, 2024.
2. "हिंदी बाल साहित्य की भूमिका(प्रेमचंद)उपयोग और महत्व". YouTube, 2022.
3. "बाल साहित्य लेखन/अर्थ स्वरूप महत्व/उदभव और विकास/सृजनात्मक हिंदी". YouTube, 2022.